क्या पानी अपना इतिहास याद रखता है?

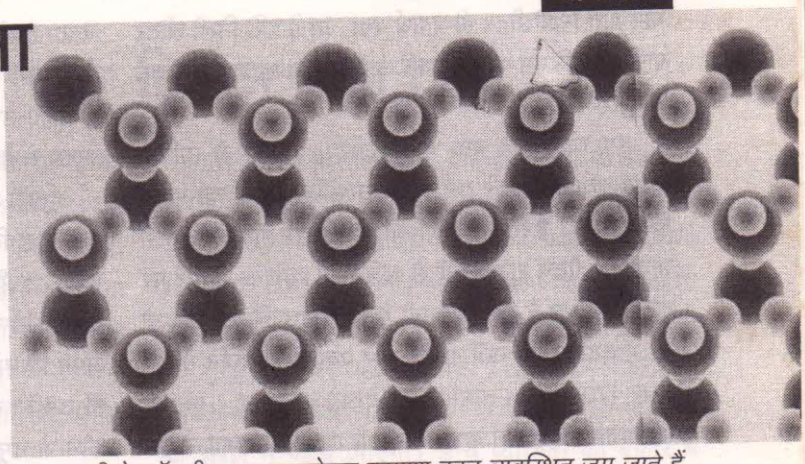

पानी के ऑक्सीजन व हाइड्रोजन परमाणु बहुत व्यवस्थित जम जाते हैं

क्या पानी में याददाश्त होती है? कई बरसों से विवाद में रहा यह सवाल होम्योपैथी के मूल में है। जब कोई पदार्थ पानी में घोला जाता है तो उसका असर पानी की आण्विक जमावट पर होता है। अब मान लीजिए कि इस घोल को पानी डाल-डालकर पतला करते जाएं और इतना पतला कर दें कि उसमें घुले पदार्थ की मात्रा (प्रति लीटर) नगण्य रह जाए। सवाल यह है कि क्या तब भी पानी की जमावट उस पदार्थ की उपस्थिति को याद रखेगी?

कई वर्ष पूर्व जेकेस बेनवेनिस्टे ने कुछ प्रयोग करके बताया था कि पानी में इस तरह की याददाश्त होती है। उस समय काफी हल्ला-गुल्ला हुआ था और बाद में जांच करने पर पाया गया था कि बेनवेनिस्टे ने अपने प्रयोग ठीक से नहीं किए थे। बेनवेनिस्टे की वैज्ञानिक साख को बहुत धक्का लगा था।

पानी की याददाश्त होम्योपैथी का आधार है। होम्योपैथी में दवाई बनाने के लिए जो तरीका अपनाया जाता है उसमें दवाई को पानी में घोलकर, उस घोल का थोड़ा हिस्सा लेकर उसे पतला किया जाता है। इस तरह क्रमशः उस घोल को पतला करते-करते इतना पतला कर दिया जाता है कि उसमें दवाई की मौजूदगी नगण्य रह जाती है।

अब फिर एक बार पानी की याददाश्त का दावा किया गया है। *फिज़िका-ए* नामक प्रतिष्ठित शोध पत्रिका में प्रकाश्य एक शोध पत्र में दावा किया जा रहा है कि पानी में जो हाइड्रोजन बंध होते हैं उनकी रचना पर घुलित पदार्थों का स्थाई असर हो जाता है। इस बात की जांच के लिए स्विस रसायनज्ञ लुई रे ने थर्मो-ल्यूमिनेसेंस विधि का उपयोग किया। इस विधि में पहले पानी को बर्फ बनाकर बहुत ठण्डा कर दिया जाता है। इस स्थिति में उस पर प्रकाश ऊर्जा की बौछार की जाती है। इस ऊर्जा को बर्फ सोख लेता है। फिर इस बर्फ को गर्म किया जाता है। गर्म होकर बर्फ/पानी सोखी हुई ऊर्जा को प्रकाश रूप में छोड़ता है। अलग-अलग तापमान पर यह ऊर्जा छोड़ी जाती है।

लुई रे ने अनुमान लगाया कि 170 केल्विन (मतलब शून्य सेल्सियस से 100 डिग्री कम) पर जो प्रकाश निकलता है वह हाइड्रोजन बंधों में पुनर्रचना की वजह से निकलता है। उन्होंने इस मामले की जांच करने की ठानी।

सेडियम क्लोराइड (नमक) और लीथियम क्लोराइड दो ऐसे पदार्थ हैं जो पानी में हाइड्रोजन बंधों को खत्म कर देते हैं- लीथियम क्लोराइड तो इन बंधों का नामोनिशान मिटा देता है। जब सोडियम क्लोराइड व लीथियम क्लोराइड घुले पानी के साथ उक्त प्रयोग किया गया तो पता चला कि वाकई 170 केल्विन पर उत्सर्जित होने वाली प्रकाश ऊर्जा का उत्सर्जन कम हुआ। अब लुई रे के दिमाग में होम्योपैथी की जांच करने की बात आई।

उन्होंने पानी में सोडियम क्लोराइड व लीथियम क्लोराइड के घोल तैयार किए। इन्हें होम्योपैथी विधि द्वारा तनु बनाया गया। अन्ततः ये घोल इतने तनु हो गए कि इनमें 10^{-30}